113 P
525
H

* वन्देमातरम् *

Give me Liberty or Give me Death.

॥ क्रान्ति पुष्पांजलि ॥

"Woe unto the Nation in whose Judgment seat a stranger sits."

De-Velera.

"Excess of severity is not the path to order on the contrary it is the path to 'Bomb.'"

Viscount Morley.

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥

प्रकाशक व सम्पादक—

[illegible] मुकर्जी देहरादून।

झंडा ऊंचा रहे हमारा।

[illegible] । झंडा ऊंचा रहे हमारा।

[illegible] प्रेम सुधा सरसाने वाला।

[illegible] भूमि का [illegible]।

891.431
M893K

भूमिका

वाचक वृन्दः-इस पुष्पाञ्जली को मैंने आद्योपान्त पढ़ा है इस में जो कवितायें संग्रह हैं वह राष्ट्र के युवक, युवतियाँ और स्त्री, पुरुषों में नवजीवन संचार करने वाली हैं। यह अपूर्व संग्रह संग्रहकर्ता ने बड़े परिश्रम से दो बार जेलों में जाकर और खास खास कवियों से प्रेरणा कर संग्रह किया है इस में वह जोशीली और राष्ट्रीय भावों से भरी हुई कवितायें दर्ज हैं जिनको गाकर नौजवानों के हृदय हाथों उछलने लगते हैं।

फांसी के तख्ते पर झूलने वालों, कालेपानी जाने वालों और जेलयात्रियों का कहा हुआ एक २ शब्द अन्य लोगों के हजारों व्याख्यानों से बेहतर है इसमें सब इसी प्रकार का संग्रह है मैं अपने देश भक्त राष्ट्रप्रेमी भाइयों से इसकी शिफारिश करूँगा कि वह इसकी जरूर कदर करें।

...प्रधान

...हरादून

क्रान्ति पुष्पांजलि

वन्देमातरम् नं० ॥ १ ॥

सुजलां सुफलां मलयजशीतलां शस्यश्यामलां-मातरम्। वन्दे ॥
शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीं ।
फुल्ल कुसुमित द्रुम दल शोभिनीं ।
सुभासिनीं, सुमधुर भाषिनीम् ।
सुखदां बरदां मातरम् । वन्दे ॥
त्रिंश कोटि कंठ कलकल निनाद कराले ।
द्विंत्रिश कोटि भुजैर्घृत खर करवाले ।
के बले मां ! तुमि अबले !
बहुबल धारिणीं, नमामि तारिणीम् ।
रिपुदल वारिणीं मातरम् ॥ वन्देमातरम् ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 525
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA

झंडा गान नं० ॥ २ ॥

झंडा ऊंचा रहे हमारा ।

प्रेमिक विश्व तिरंगा प्यारा । झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ।

झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

स्वतंत्रताके भीषण रणमें लखकर बढ़े जोश क्षणक्षण में।
कांपें शत्रु देख कर मनमें मिटजाये भय संकट सारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥
इस झण्डेके नीचे निर्भय, लेंस्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय. स्वतन्त्रता है ध्येय हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा।
इस की शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
सकल विश्व में यह फहरावे तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

— —

वन्देमातरम् नं ॥ ३ ॥

कौम के ख़ादिम की है जागीर वन्देमातरम्।
है वतन के वास्ते अक्सीर वन्दे मातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर बन्दूक पर अपनी ग़रूर।
है इधर हम बेकसों का, तीर वन्देमातरम् ॥
क़त्ल की हमको न दें, धमकी हमारे सब्र से।
तेग़ पर हो जायगा तहरीर वन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे मैं, जबकि किस्मत में मेरी।
लिख चुका है राक़िमे, तहरीर वन्देमातरम् ॥
फ़िक्र क्या जल्लाद ने गर, क़त्ल पर बांधी कमर।

रोक देगा दूर से, शमशीर वन्देमातरम् ॥
ज़ुल्म से गर कर दिया, खामोश मुझको देखना ।
बोल उठ्ठेगी मेरी, तस्वीर वन्देमातरम् ॥
सर ज़मीं इंगलैण्ड की, हिल जायगी दो रोज़ में ।
गर दिखायेंगी कभी, तासीर वन्देमातरम् ॥
सन्तरी भी मुज़तरिब थे, जब कि हर झंकार पर ।
बोलती थी जेल में, जञ्जीर वन्देमातरम् ॥

भारत प्रशस्ति नं० ॥ ४ ॥

अयि ! भुवन मन मोहिनी,
निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धरणी ।
जनक-जननी-जननी ॥ १ ॥

अयि ! नील सिन्धु जल धौत चरण तल
अनिल विकम्पित श्यामल अञ्चल
अम्बा चुम्बित भाल हिमाचल
अयि शुभ्र तुषार किरीटिनी ॥ २ ॥

प्रथम प्रभात उदय तव गगने
प्रथम साम रव तब तपोवने
प्रथम प्रचारित तवनत भवने
कत बेद काव्य काहिनी ॥ ३ ॥

चिर कल्याण मयी तुमिइ माँ धन्य
देश विदेशे वितरिछ अन्न
जाह्नवी यमुना विगलित करुणा
पून्य पीयूष स्तन्य पायिनी ॥ ४ ॥

अयि ! भुवन मन मोहिनी

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

रण में जाने की विदाई ॥ ५ ॥

रण गीतः—

माँ कर विदा आज जाने दे,

जग में तेरा मान बढ़ाने, धर्म कर्म का पाठ पढ़ाने,
वेदी पर बलिदान चढ़ानेजाते सरसे कफन बाँध कर—
रण चढ़ लोह चबाने दे "माँ ॥ १ ॥

क्यों माँ मलिन सुवेश तुम्हारा, कम्पित अङ्ग अङ्ग है सारा,
बहती क्यों आँसू की धारा, वीरों की जननी जब तक हम,
जीवित आँच न आने दे "माँ ॥ २ ॥

अब गुलाम हो कर न रहेंगे, और न अत्याचार सहेंगे,
खोल खोल कर खूब कहेंगे, "मिट जावे सरकार",
क्रान्ति की अग्नि सुलगाने दे "माँ ॥ ३ ॥

आँखों में फिर जङ्ग रङ्ग है मन में मर मिटने की उमङ्ग है.
माँ तेरी आशीष सङ्ग है, नोजवान चुप रहे किस तरह,
फिर दो हाथ दिखाने दे "माँ ॥ ४ ॥

धरा धसक भूधर फूटेंगे, नभ के यह तारे टूटेंगे,
गोरों के छक्के छूटेंगे, होने दे हुङ्कार हमारी,
दुनियां को दहलाने दे "माँ ॥ ५ ॥

खोले खड़े सामने सीने, बढ़ कर रुधिर शत्रु का पीने,
जाते है फिर मर कर जीने, पीछे पैर न पड़े शान से,
रिपु का मान मिटाने दे "माँ ॥ ६ ॥

तेरा रुधिर गर्व से पीते, गोरों को हैं वर्षों बीते,
लानत हमें रहें जो जीते, आँखों से दुर्दशा देख कर,
अब भी खड्ग उठाने दे "माँ ॥ ७ ॥

माँ न रोक जायें दुःख झेलें, भरदें फिर जेलों पर जेलें,
फाँसी के तख्तों पर खेलें, दाँतों उङ्गली दावें दुश्मन,
जीवन जोश जगाने दे "माँ ॥ ८ ॥

फिर से उथल पुथल मच जावे स्वतन्त्रता का रङ्ग रच जावे।
जोर जालिमों का लच जावे बहे रक्त की धार हर तरफ,
हँस हँस शीश कटाने दे "मां। ९ ॥

मां फिर तेरे सब दुःख खोवें, ऋद्धि सिद्धी पद पंकज धोवें,
सुर समूह न्योछावर होवे, प्यारी भारत भूमि हमारी,
हम भारत के गाने दे "मां ॥ १० ॥

हमारा धर्म ॥ ६ ॥

क्यों यह राज्य हमें हो प्यारा, प्रिय स्वराज्य है धर्म हमारा।
जलियां हत्या कांड रचाया नाकों बल हमको खिन्चवाया।
गुरू बाग में कत्ल कराया, स्त्री बच्चों को मरवाया॥
उफ प्यारे पंजाब केसरी को जिसने लाठी से मारा॥ १ ॥
पूज्य राष्ट्र पति को पिटवाना, पेशावर में बम बरसाना।
शोलापुर का यह पशुतापन, मार्शल्ला का कटु दिग्दर्शन॥
हाय लखनऊ में अबलाओं पर कैसा अत्याचार गुजारा॥२॥

नर पिशाच गुण्डे पशुशासक, पापी राज्य पतित हत्यारा ॥३॥
स्वतन्त्रता को वंचित करके, मालिक हुये गैर इस घर के।
लूट रहे हमको ऊी भरके, सुख सम्पति अन्त धन हरके ॥
खून चूस कर पनप रहे जो, इनको अब है मार भगाना ॥ ४ ॥
अब स्वराज्य लेकर छोड़ेंगे, गोरों से हम मुख मोड़ेंगे ।
मिट जावे परवाह नहीं है, पतित राज्य की चाह नहीं है ॥
देख २ अन्याय जुल्म अब, खौल रहा है खून हमारा ॥ ५ ।

उनके अत्याचार और हमारी सहनशीलता नं॥७॥

इधर नाजिल बलाये नागहानी देखते जावो.
उधर उनके दमन की नौजबानी देखते जावो !
चलाते हो हमी पर तीर और हम उफ़ नहीं करते,
ज़ुवां रखते हैं लेकिन वेज़ुवानी देखते जावो !
ये छींटें खून के उस दामने कातिलसे कहते हैं,
शहीदाने वतन की कुछ निशानी देखते जावो ।
अभी लाखों ही बैठे हैं बुझाने को ये प्यास अपनी,
खतम हो जायेगा खंजरका पानी देखते जावो ।
ओ साहब ज़वां काले से क्या यह मोड़ लेते हैं,
मेरी गर्दन पर खंजर की रवानी देखते जावो ।
करोगे खून नाहक कब तलक मजलूम का जालिम,
रहेगी कब तलक ये हुक्म रानी देखते जावो ।
हमारी आह से आतिश भड़क उट्ठेगी दुनिया में,
अब रंगत है कि गर्दिश आसमानी देखते जावो ।

स्वतन्त्रता आवहन नं० ॥ ८ ॥

है आज जमाना हे वीरों! आजादी के दीवानों का।
जीवन धन सब कुर्बान करो है आज समय बलिदानों का॥
अपना स्वराज्य लेना होगा इङ्गलैण्ड आप झुक जावेगा।
अपने पैरों पर आप डटो तुम तजो आश परवानों का॥
उच्च हिमालय से सागर औ ब्रह्मपुत्र से गुर्जर देश।
अटक कटक लों आडर हो अब गान्धी के फरमानों का
हो तौक गुलामी टूक टूक माता के बन्धन कट जावे॥
बलिवेदी पर बलि होने को अब झुण्ड चले मरदानों का।
चलो हिन्द देश में एक सिरे से आग लगादे हे भाई॥
हो देश बीच अब उथल पुथल और खौले खून जवानों का
फांसी से अब तुम नहीं डरो परवाह नहीं गोली बरसे॥
हो खुली संगीनों पै छाती और कौल रहे मरदानों का।

रघुपति प्रार्थना नं० ॥ ९ ॥

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम।
हम सत्याग्रहियों की लाज जीते शान्त सत्य संग्राम॥
डण्डे की हो सर पर मार या गोली की बौछार।
युद्ध क्षेत्र में आवे जपते हुये तुम्हारा नाम॥
अन्यायी दे कारागार जी भर करले अत्याचार।
कोड़े मारे खीचे चाम कहें यही हम हे! सुखधाम॥
यदि आवे हम को कुछ क्रोध अपमान का लें प्रतिशोध।
हिन्सा हम में जगे ललाम तो तुम लेना हम को थाम॥

बेड़ी की मृदुमय झंकार हथकड़ियों के अतिशय प्यार।
हो हम को हे जगदाधार! यही प्रार्थना है मम श्याम॥
सहन शक्ति की होवे देव समय पड़े तो हम स्वमेव।
एक बार बस तुमको देव फाँसी पर चढ़ करें प्रणाम॥
अनाचार दुख का दे दाम दुष्टों का हो काम तमाम।
नेता छूटें लें विश्राम जपें प्रेम से आठों याम॥
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम॥

जागृति आव्हान नं० १०॥

जागिये स्वदेश बन्धु भोर भई प्यारे॥
माता की है पुकार आज छोड़ो घर द्वार।
देखो आँखें उघार जननि अश्रु डारे॥
शासन की कुटिल नीति छोड़ो इसकी प्रतीति॥
भारत के नौ निहाल नाहक इन मारे॥ जागिये॥
छीना सब रोज़गार लूटा धन बेशुमार।
बंधन में मातृभूमि कैसे धार धारे॥ जागिये॥
पाये हैं बड़े संकट संपत्ति सुख हुआ नष्ट।
सोने से छोटे सभी जवाहर तुम्हारे॥ जागिये॥
मिलकर फिर एक बार गर जो भाग जाये स्यार।
मचलो होकर अधीर काले फल वालो॥जागिये॥
साजो सब रण के साज बैरी पै डारो गाज।
पहनो तुम फिरसे ताज शत्रु से न हारें॥जागिये॥

वीर नवयुवकों नं० ॥ ११ ॥

सुधरे तो इण्डिया की तुम्हो आन वान हो।
बिगड़े तो गुलामी के तुम्ही मेज़वान् हो ॥
तुम भाव हो अभिमान हो भारत की शान हो।
लाखों शहीद नौजवानों के निशान हो ॥
माँ पूछती है लाल ! अगर बावफ़ा हो तुम।
कुर्बान हो के आज दिखादो कि क्या हो तुम ॥

आजादी के दीवाने की हार्दिक इच्छा ॥१२॥

मेरी जान रहे मेरा सर न रहे, सामान रहे न ये साज रहे।
फ़क़त हिन्द मेरा आजाद रहे माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में सोहे तिलक जिसकी और गोदमें गान्धी विराज रहे।
न ये दाग़ बदन में सुफेद रहें न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥
मेरे हिन्दु मुसल्मां एक रहें, भाई भाई सा रस्मो रिवाज रहे।
मेरे वेद पुराण कुरान रहें, मेरी पूजा सन्धा नमाज़ रहे।
मेरी टूटी मण्डैया में राज रहे ,कोई गैर न दस्तन्दाज रहे।
मेरी बीना के तार मिले हों सभी एक भीनीमधुर आवाज रहे ॥
यह किसान मेरे खुश हाल रहे पूरी हो फ़सल सुख साज रहे।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें मेरी माँ बहिनों में लाज रहे ॥
मेरी गाय रहे मेरे बैल रहें, घर घर में भरा नित नाज रहे।
घी दूध की नदियां बहती रहें हरसू आनन्द स्वराज्य रहे ॥
'शर्मा की है चाह खुदा की कसम मेरे बाद वफात वे याद रहे।
गाढ़े का कफन हो मुझपै पड़ा 'वन्देमातरम्' अल्फाज रहे ॥

अलीपुर बम केस के अभियुक्त ।

(श्री ओ३म्प्रकाशजीके कालेपानी जाते समयके उद्गार। जिसको श्री रामप्रसाद बिस्मिल काल कोठड़ीके अन्दर गाया करते थे) ॥ १३ ॥

हैफ़ जिसपै कि हम तय्यार थे मरजाने को ।
जीते जी हमसे छुड़ाया उसी काशाने ॥
आसमां क्या यही बाक़ी था ग़ज़ब ढाने को ।
लाके गुर्बत में जो रक्खा हमें तड़पाने को ॥
क्या कोई और बहाना न था तरसाने को ॥ १ ॥
फिर न गुलशन में हमें लायेगा सैय्याद कभी ।
क्यों सुनेगा तू हमारी कोई फ़रयाद कभी ॥
याद आयेगा किसे यह दिलेनाशाद कभी ।
हम भी इस बाग़ में थे कैद से आज़ाद कभी ॥
अब तो काहे को मिलेगी यह हवा खाने को ॥२॥
दिल फ़िदा करते हैं कुर्बान जिगर करते हैं ।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं ॥
खाने वीरान कहाँ देखिये घर करते हैं ।
खुश रहो अहले वतन हमतो सफ़र करते हैं ॥
जाके आबाद करेंगे किसी वीराने को ॥ ३ ॥
देखिये कब यह असीराने मुसीबत छूटें ।
मादरे हिन्द के कब भाग खुले या फूटें ॥
देश सेवक सभी अब जेल में मूजें कूटें ।
आप याँ ऐश से दिन रात बहारें लूटें ॥
क्यों न तरजीह दें इस जीने पै मरजाने को ॥ ४ ॥
कोई माता की उम्मीदों पै न डाले पानी ।

जिन्दगी भर को हमें भेज के काले पानी ॥
मूंह में जल्लाद हुए जाते हैं छाले पानी।
आवे खञ्जर का पिला करके दुआले पानी ॥
भरने क्यों जायें हम इस उम्र के पैमाने को ॥ ५ ॥
हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर।
हमको भी पाला था माँ बापने दुःख सह सहकर ॥
वक्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आवे कह कर।
गोद में आंसू कभी टपके जो रुख से बह कर ॥
तिफ़्ल उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ॥ ६ ॥
देश सेवा ही का बहता है लहू नस नस में।
अब तो खा बैठे हैं चितौड़ के गढ़ की कसमें ॥
सर फरोशी की अदा होती है यों ही रस में।
भाई ख़ंजर से गले मिलते हैं सब आपस में ॥
बहने तैयार चिताओं में हैं जल जाने को ॥ ७ ॥
नौजवानो जो तबीयत में तुम्हारी खटके।
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ॥
आप के अज्वे बदन होवें जुदा कट कट के।
और सद चाक हो माता का कलेजा फटके ॥
पर न माथे पर शिकन आये क़सम खाने को ॥ ८ ॥
अपनी किस्मत में अजल से ही सितम रक्खा था।
रंज रक्खा था महन रक्खा था गम रक्खा था ॥
किसको परवाह थी और किसमें यह दम रक्खा था।
हमने जब वादिये गुरबत में कदम रक्खा था ॥
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ॥ ९ ॥
अपना कुछ गम नहीं लेकिन यह ख्याल आता है।
मादरे हिन्द पै कब तक यह जवाल आता है ॥

देश आज़ादी का कब हिन्द में ख्याल आता है।
कौम अपनी पै तो रो रो के मलाल आता है॥
मुन्तज़िर रहते हैं हम खाक में मिल जाने को ॥१०॥
मैकदा किसका है यह जामे सबू किसका है।
वार किसका है मेरी जां यह गलू किसका है॥
जा बहे कौम की खातिर वह लहू किसका है।
आस्मां साफ़ बता दे तू अदू किसका है॥
क्यों नये रंग बदलता है तू तड़फाने को ॥११॥
दर्द मन्दों से मुसीबत की हलावत पूछो।
मरने वालों से ज़रा लुत्फ़ शहादत पूछो॥
चश्मे मुश्ताक से कुछ दीद की हसरत पूछो।
सोज कहते हैं किसे पूछो तो परवाने को॥ १२॥
बात तो जब है कि इस बात की ज़िद्दें ठानें।
देश के वास्ते कुर्बान करें सब जानें॥
लाख समझायें कोई एक न उसकी मानें।
कहता है खून से मत अपना गरेबां सानें॥
नासहा आग लगे तेरे इस समझाने को ॥१३॥
न मयस्सर हुआ राहत में कभी मेल हमें।
जान पर खेल के भाया न कोई खेल हमें॥
एक दिन को भी न मंज़ूर हुई बेल हमें।
याद आयेगा अलीपुर का बहुत जेल हमें॥
लोग तो भूल ही जायेंगे इस अफसाने को ॥१४॥
अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली।
एक होती है फकीरों की हमेशा बोली॥
खून से फाग रचाये हमारी टोली।
जब से बङ्गाल में खेले हैं कन्हैया होली॥

काई उस दिन से नहीं पूछता बरसाने को ॥ १५॥
नौ जवानो यही मौका है उठो खुल खेलो।
खिदमते कौम में जो आये वला तुम झेलो॥
देश के सदके में माता की जवानी देलो।
फिर मिलेगी न यह माता की दुआयें लेलो॥
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को॥ १६॥

सत्याग्रह का बिगुल नं० ॥ १४ ॥

बिगुल बजा है सत्याग्रह रण थल में अड़ जाना होगा।
हसते बलि वेदी पर गौरव से चढ़ जाना होगा॥
जीवन की है ज्योति अनुपम इसको आज बुझाना होगा।
रणचण्डी को युद्ध भूमि में मर कर तुम्हें रिझाना होगा॥
ऐ जीवन मद के मतवाले नींद त्याग कर शस्त्र उठाले।
उठ पड़ ऐ मद हाश युद्ध में सोना और सुलाना होगा॥
शत्रु कोप की प्रबल प्रचंड ज्वाल में आहुति देनी है।
उफ़ तक मुँह से बिना निकाले हँस२ कर जल जाना होगा॥
मात्रभूमि के दर्द भरे करुणा क्रदन को सुन कर के।
रक्त ऋनी सैनिकगण माँ आज स्वतन्त्र कराना होगा॥
धर्म अहिंसा पर दृढ़ रह कर जीवन की बलि दे दो वीर।
जती जतीन दास सम भूखों तड़प २ मर जाना होगा॥
प्राणों की बाजी का सौदा प्रेम से करलो ऐ वीरो।
जीवन और मृत्यु का पल २ पर इस खेल खिलाना होगा॥
प्रेम धर्म के प्रेम विश्व में सदा प्रेम जय पाता है।
इसी तत्व को सन्मुख रख कर प्रेम भाव दरसाना होगा॥

शहीदाने वतन की आर्जू ॥ १५ ॥

वतन पर सर कटाने को तहे तलवार जाते हैं।
शहीदाने वतन हँस हँस के चढ़ने दार जाते हैं॥
सरे मक़तल हुकूमत आज़माले खूब ख़ञ्जर को।
नहीं यह काफ़िले वह हैं जो हिम्मत हार जाते हैं॥
पहन कर बेड़ियाँ निकले जो ज़िन्दानों से दीवाने।
अजब शोखी है जञ्जीरों को करते प्यार जाते हैं॥
है क्या ही चुलबुला पन मुसकराहट में असीरों के।
जबाँ हैं बलबले हुब्बे वतन पर वार जाते हैं॥
है मग़रूरों को अब भी नाज़ अपनी तीर तोपों पर।
मगर आहों की आतिश में ये सब बेकार जाते हैं॥

आजादी की लगन् ॥१६॥

आजादी की लगी लगन को।
मन मिटने के लिये मगन हो॥
मा ! [illegible] दे बन्धन को तोड़े कभी न हम रण से मुख मोड़े।
[illegible]लि बेदी से नाता जोड़े अब मरने से डरना छोड़े॥

शहीदों के खूं का असर ॥ १७ ॥

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे ज़ालिम का घर देख लेना॥

किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥
झुका देंगे गरदन को हम ज़ेरे ख़ञ्जर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुद ग़र्ज गोली चलाते हैं हम पर।
तो क़दमों में उनका ही सर देख लेना ॥
जो नख़्ल हमने सींचा है खूं ने जिगर से।
वह होगा कभी बार वर देख लेना ॥
किनारे पर आये भँवर से वह किश्ती।
वह आयेगी एक दिन लहर देख लेना ॥
बलायें यह जायेंगी खुद सर नगूँ हों।
नही होगी इनकी गुज़ार देख लेना ॥
खुजन्दी हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी ययह यक दिन ख़बर देख लेना ॥

क्रान्ति आवाहन ॥ १८ ॥

चाहे जितना भले दमन हो।
मन मिटने के लिये मगन हो ॥
खूं न शहीदों का रङ्ग लाये लाशों का सागर लहराये।
जग में बिजय ध्वजा फहराये, दुश्मन देख २ दहलाये ॥
भेंट तुमरी यह जीवन हो।
मन मिटने के लिये मगन हो ॥
मची मुल्क में उथल पुथल हो, खूब क्रान्ति कोलाहल हो।
वीरों का दिल रहा मचल हो, व्याकुल नौकर शाही दल हो ॥

नाश ज़ालिमों का भगवन हो।
मन 'मटने के लिये मगन हो ॥
बन्दी गृह के ताले टूटें देश भक्त सब निर्भय छूटें।
मूंज देशद्रोही अब कूटें, स्वतन्त्रता का सुख हम लूटें ॥
हराभरा अब हिन्द चमन हो।
मन मिटने के लिये मगन हो ॥

वीर गर्जना ॥ १६ ॥

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना ॥
मत बुजदिली को हरगिज तुम पास दो फटकने।
अख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वातन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलान ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥
माता की कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालंटियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना।
दिल में झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ ॥
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली खाना।
"सरजू" समय यही है कुछ करलो देश सेवा।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना ॥

स्वतन्त्रता-पूजन ॥ २० ॥

अधीन होकर बुरा है जीना, है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।
सुधाको तजकर ज़हरका प्याला, है पीना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
पड़ीहों हाथोंमें हथकड़ी यदि, तो स्वर्ग के सुखसे लाभ क्या है ।
नरकके दुखमें निवास निशिदिन है मरनाअच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
जो दास होकर मिलें भवनमें, सुस्वादु भोजन तो तुच्छ हैं सब ।
सदैव उपवास करके बन में, विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
मिलें उपाधि या मान पदवी जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब ।
घृणा के गड्ढे में होके व्याकुल, उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ।

स्वतन्त्रता कैसे आती है ॥ २१ ॥

आती है प्यारी आज़ादी ।

चरखेकी सन सन पुकार से, इस खादी के तार तार से ।
शान्ति अहिंसा सुखद धार से-इन जेलों के द्वार द्वारसे ॥
आती है प्यारी आज़ादी ॥

बेड़ी की शुचि झंकारों से-गन गोली से तलवारों से ।
भीषण डण्डों की मारों से-दुष्टों के अत्याचारों से ॥
आती है प्यारी.............. ॥

दीनों की इन झोंपड़ियों से, आहोंसे दृग अश्रु झड़ियों से ।
बीतरही दुःख की घड़ियों से, पराधीनता की कड़ियोंसे ॥
आती है प्यारी.............. ॥

वीरों के खूं की लहरों से-घायल बच्चों की कहरों से।
क्रूर शासकों के पहरों से-गांवों से शहरों शहरों से॥
आती है प्यारी ....॥

मन तरङ्ग ॥ २२ ॥

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है।
करें आज़ाद भारत को यही एक धुन समाई है॥
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत वीर भूमी है।
करें बरबाद हम उनको कि जिन से दुश्मनाई है॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके शपथ हमने यह खाई है॥
है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिन से।
कटें आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदायी है॥
करो ज़ुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल मत जाना।
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं॥

हमारा झण्डा प्यारा है ॥ २३ ॥

अन्य देशों से न्यारा है—हमारा झण्डा प्यारा है।
बुराई इसकी मत करना-हमेशा इस पर ही मरना।
क्लेश आवें उनको हरना-मौत से कभी नहीं डरना।
यही जगका उजियारा है। हमारा झण्डा.... ॥
यही है निज स्वदेश की शान-इसी का हमको है अभिमान।

सभी मिल गाते इसके गान-वारते इस पर जीवन प्राण।
इसी का सदा सहारा है। हमारा झण्डा ...... ॥
वीर रण प्राङ्गण को जाते-तिरङ्गा कर में फहराते।
हर्षाते गौरव गुण गाते इसी के आगे सिर नाते।
देश का यही सितारा है। हमारा झण्डा ...... ॥
इसी से शोभामय है देश—मलिन मत करना इसका वेश।
मरो मिट जावो पावो क्लेश—न छूटे करमें रहे हमेश।
दुश्मनोंको यह आरा है। हमारा झण्डा .....
न इसकी शान कभी जावे-देशभर के यह मन भावे।
दिव्यता अपनी दरशावे—विश्व विजयी यह कहलावे।
यही सर्वस्व हमारा है। हमारा झण्डा ..... ॥

सितमगर की सितम आराइयां ॥ २४ ॥

गिरेगा आप ही मक्तल में कातिल नीमजां होकर।
उड़ेगा मेरी आहों से फलकपर खुद धुआँ होकर॥
अकड़ फूँ भूल जायेगा सितमगर एक दिन सारी।
बजेगा बिगुल आज़ादी जब अपने दर्मियां होकर।
किले मिस्मार होंगे मानचष्टर लंकाशायर के।
गिरेगा तार खद्दर उनपै जिस दम बिजलियां होकर॥
भागेंगे दुम दबाकर लार्ड इरविन अपनी लन्दन को।
सुदर्शन चक्र गान्धी का चलेगा जब अयां होकर॥
उजाड़ा घर को मेरे और किया बरबाद घर अपना।
तेरे ज़ुल्मो सितम से यह चमन उजड़ा ख़िजां होकर॥
कोई वादा भी ज़ालिम आज तक पूरा किया तूने।

कि जिससे आग दोज़खकी निकलता दरमियां होकर ॥
सितम आराइयां ज़ालिम तेरी क्या कम ग़रीबों पर।
चलाईं लाठियां बरसाईं गोली मेहरवां होकर ॥
छिपायेगा तू क्योंकर वक्त महशर उन गुनाहों को।
कि जिनको आग-दोज़ख खुद बतादेगी फुगां होकर ॥
न कर अभिमान ताजो तख्तका अय खुद सता प्रेमी।
उड़ेगा दामने तरज़े हुकूमत धज्जियां होकर ॥

आजादी की लगन ॥ २५ ॥

आग आज़ादी की भड़की है हमारे तन में।
हम तो जाने के लिये बैठे हैं खुश हो रण में ॥
देश बरबाद हुवा खानये वीरां अपना।
ग़ैर क़ाबिज हुए बैठे हैं मेरे गुलशन में ॥
भूखे भारत के पड़े लाल सदा रोते हैं।
कोई सड़कों पै पड़ा कोई व्याकुल वन में ॥
छीने हथियार मेरे मुझ को निहत्था करके।
गोली भर भर के लगाते हैं हमारे तन में ॥
बन्द कर मेरी जवां मुंह पर लगाया ताला।
हँस २ के कहते हैं कहो क्या है तुम्हारे मन में ॥
डाल कर बेड़ियां और बन्द कफस करके मुझे।
खब जकड़ा है गुलामी के मुझे बन्धन में ॥
मालो ज़र लुट कर अङ्गरेज़ चला लन्दन को।
इस लिये प्रेमी समाया है मेरी चितवन में ॥

गीता उपदेश ॥ २६ ॥

रण में कैसा किस से नाता ।

जो सन्मुख आवे सोई अरि है,
चाहे सुत पितु हो चाहे भ्राता ।
तुम्हें सुहावें उच्च पदवियां,—
हमको निज कर्तव्य सुहाता ।

रण में कैसा किस से नाता ।

तुम को प्रिय निज यश वैभव,—
हम को प्रिय है भारत माता ।

रण में कैसा किस से नाता ॥

तुम हो यदि हिरण्य कश्यप नृप,—
हम प्रह्लाद हिन्द के त्राता ।

रण में कैसा किस से नाता ॥

सारे नाते हैं एक धर्म के—
धर्म हमें यह मर्म सिखाता ।

रण में कैसा किस से नाता ॥

कैवलि हुई सुरपुर सुर हुइ हैं,—
कै हुइ हैं निज देश विधाता ।

रण में कैसा किस से नाता ॥

———

शहीद गर्जना ॥ २७ ॥

(ले०-काकोरी के शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलाम खाना ।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना ॥
खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का ।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना ॥
क़ौमी तिरङ्गे झंडे पर जां निसार अपनी ।
हिन्दू मसीह मुस्लिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल ओ दमन की प्यारो ।
यक खेल हो रहा है फाँसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे ।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

सर फ़रोशी की तमन्ना ॥ २८ ॥

(ले०-बिस्मिल)

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुये क़ातिल में है ॥
रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है ॥

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतलमें क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है॥
अब न अगले बलबले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ़ मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है॥

———

पुष्प-हृदय ॥ २९ ॥

चाह नहीं है सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं है प्यारी के गल पड़ूँ हार में ललचाऊं॥
चाह नहीं है राजाओं के शव पर मैं डाला जाऊं।
चाह नहीं है देवों के सिर चढ़ूं भाग्य पर इतराऊं॥
मुझे तोड़ कर हे वनमाली!
उस पथ में देना तू फैंक।
मातृ भूमि हित शीश चढ़ाने,-
जिस पथ जावें वीर अनेक॥

———

युद्ध-घोषणा ॥ ३० ॥

रण भेरी बच चुकी वीरवर! पहिनों केसरिया बाना।
बढ़े चलो ऐ भारत वीरो! ऋषियों की प्यारी सन्तान॥

स्वतन्त्रता के भीषण रणमें हो जावो हर्षित बलिदान।
धर्म - पन्थ में मरना भी है अमर स्वर्ग पद का पाना॥
माता के सच्चे पूतों की आज कसौटी होना है।
देखें कौन निकलता पीतल कौन निकलता सोना है॥
उतरेंगे जो आन युद्ध में वही शूर है मरदाना।
महामदान्ध शासन उलटादो सत्य शान्तिमय वीरों से॥
अन्यायी अरि को दहलादो अपने प्रबल प्रहारों से।
स्वतन्त्रता की ध्वजा पताका ऊँची फहराते जाना।
साठ बरस के बूढ़े गान्धी जेल चले जाते हैं आज॥
फिर भी तुम्हे युवक! कहलाते उरमें तनक न आती लाज।
स बिड़म्बना के जीवन से तो अच्छा है मरजाना।

वीर प्रतिज्ञा ॥ ३१ ॥

प्राणों की भेंट चढ़ायगे हम बलिवेदी पर जायेगें।
हम अमर नहीं मरने का डर यह तो जीवन की राह भली।
है शिवा प्रताप गये जिससे, वीरों की है वही गली॥
जनता के कष्ट छुड़ायेंगे॥ हम बलिवेदी०
हम बड़े शौक से पहिनेंगे, पहिनायेंगे जा हतकड़ियां।
जेलों में अलख जगा करके तोड़ेंगे माता की कड़ियां॥
अन्याई राज्य मिटायेंगे॥ हम बलिवेदी०
भाले तलवारों तोपों से हम कभी नहीं भय खायेंगे।
हम देश प्रेम मत वाले हैं, सूली पर भी चढ़ जायेंगे॥
भारत स्वाधीन बनायेंगे॥ हम बलिवेदी

जेल यात्रियों की तसला प्रार्थना ॥३२॥

हे ! तसले देव प्रणाम तुम्हें तुम तो महान उपकारी हो।
भाई हो सगे सहोदर हो और तुम्हीं बाप महतारी हो।
तुम हो सब गुण सम्पन्न देव, महिमाकाकौन बखान करे।
तुमहो अपार जिन का न पार किस प्रकार से गुण गान करे।
फिर भी कुछ महिमा गावेंगे, जितनी कुछ बुद्धि हमारी है॥
हो तवा कढाई बटलोई और तुम्हीं लोटा थारी हो।
खुर्पी फावडा कुदाल तुमहो और तुम्हीं छुरी कटारी हो।
चौकी तकिया मूढा तुम हो तुम घड़ा कमोरी झारी हो ॥
सिलबटनी और प्याला प्यालीहो तुम ढोलक और मजीरा हो।
भण्डार हो तुम आनन्दों के सुखों के तुम्ही ज़खीरा हो।
एक मात्रा कटोरी देवी के पति हो पत्नी व्रतधारी हो।
हे देव सहित पत्नी के तुम जिस पर प्रसन्न हो जाते हो॥
जो हित से सेवा करता है उसको तुम दिन दिलवाते हो।
हम सब शाही मेहमानों के सब प्रकार से हितकारी हो॥

बसन्ती चोला ॥ ३३ ॥

मा मेरा रङ्ग दे बसन्ती चोला,
इसी रंग में वीर शिवाने माँ का बन्धन खोला।
यही रङ्ग हल्दी घाटी में, खुलकर के था खेला ॥
यही रङ्ग नव भारत के हितु नवयुग का है मेला।
इसी रङ्ग में भगतदत्त ने फेंका बम का गोला ॥
इसी रङ्ग में अशफाकुल्लाने सरकारी खजाना खोला।

यही रंग रामप्रसाद ने काकोरी केस में घोला ॥
इसी रंग में वीर जितेन ने बदला जेल में चोला ।
इसी रंग में वीर जवाहर लिये फिरे हैं झोला ॥
इसी रंग में गान्धी जी ने नमक पर धावा बोला
भारत के इस प्यारे रंग का है दुनिया में रौला ॥
इसी रंग को सब रंग गावो यह रंग अनमोला ।

———

जवानो उठो हिन्द सन्तान ॥३४॥

चाहती है माता बलिदान जवानो उठो हिन्द सन्तान ।
हंसते हुये फूल से आकर शीश झुका दो मा के पग पर ।
कटता हो कट जाने दो सर, तनिक न हो हैरान ॥
जवानों उठो०
सोने वालों ! उठो कड़क कर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर ।
बूढा हो नारी हो या नर, सब को है आह्वान ॥
जवानों उठो०
हो चमार भंगी या पासी विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्री हो उपवासी, सब का भाग समान ॥
जवानों उठो०
उठो अपढ़ मूरख विद्वानों, हिन्दु मुस्लिम औ किरस्तानों ।
जैनी, पारसी, सिक्ख, महानों, प्यारी मां के प्रान ॥
जवानों उठो०
ओ छात्रों ! भावी अधिकारी उठो २ निद्रित व्यापारी ।
उठो मजूरों दीन भिखारी दुखी दरिद्र किसान ॥
जवानों उठो०

हो गुह्लाम कैसा ही दागी, बर्तमान शासन अनुरागी।
नरम गरम वैरागी त्यागी, उठो सभी मतिमान ॥
जवानों उठो०
स्वार्थ और मतभेद मिटाओ, बैर फूट को दूर भगाओ।
फहराओ तुम आज हिन्द में, इक जातीय निशान ॥
जवानों उठो०
फांसी चढ़ो जेल में जाओ, भयवस कभी न देश भुलाओ।
हथकड़ियों पर मिल कर गाओ, स्वतन्त्रता का गान ॥
जवानों उठो०

रणवीरों को आवाहन ॥ ३५ ॥

आवो वीरों समर क्षेत्र में नव जीवन सर सायेगा।
शीघ्र भारतीय हुँकारों से लण्डन भी थर्रायेगा ॥
आज वर्ष दिन है स्वराज्य का नवयुग का यह मेला है।
उठो भारतीय शीघ्र नहालो स्वतन्त्रता की वेला है ॥
बीर सपूतो आगे बढ़ कर आज आत्म बलिदान करो।
पुण्य दिवस में भारत माँ का इस प्रकार सम्मान करो ॥
लहरायेगा हृदय तिरंगा झण्डा जब लहरायेगा।
शीघ्र भारतीय हुँकारों से लण्डन भी थर्रायेगा ॥
आज शान्त काले सागर में उठेगा तूफान महान्।
फट जावेगा शासन बादल चमक उठेगा हिन्दोस्तान।
जननि अंकमें एक बार फिर देंगे दर्श कृष्ण भगवान्।
माता निज नेत्रों देखेगी अपने पुत्रों का बलिदान ॥
शीघ्र तपस्या और शक्ति दोनों का भेद दिखायेगा ॥

तिकड़म आरती ॥ ३६ ॥

जय तिकड़म माया ओं जय तिकड़म माया ।
तेरा यश गुण वैभव जेलों में छाया ॥
ध्यान धरे जब कोई बन्दी जन तेरा,
हो प्रकाश दुख नशै और हो सन्तन ढिंग डेरा ॥
कंस जेल वसुदेव देवकी जाय सहाय करी,
गोकुल भेज कन्हैया विपदा सकल हरी ॥
पुत्र समेत शिवाजी दिल्ली बन्द करे,
तव प्रसाद से देवा मंसूबे विगरे ।
ए०बी० हो या सी० हो सब तुम को ध्यावें
बीड़ी पान तमाकू वारक में पावें ॥
मन चाहे पकवान मिठाई मेवे मिल जाते ।
पाय खबर दुनियां की फिरते मदमाते ॥
सख्त मशक्कत से भी तू देती है छुटकारा
फाँसी वालों को भी है अमृत धारा ॥
जन्म कैद को सुन करके कैदी डरते हैं,
तेरा पाय सहारा पार उतरते हैं ॥
चूके जो सेवा में तो पेशी होवे,
मिले कोठरी बेड़ी या कुछ दिन खोवे ॥
मात पिता सुत दारा तुझ को ही कहते,
कष्ट हरो भक्तों के जोहैं चरण गहते ॥
तिकड़म देव की आरती नित प्रति जो गावे,
बन्द सात तालों में भी रह कर सुख पावे ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 525
Date 13-12-71
GOVT. OF INDIA

शहीदाने वतन की दुआ ॥ ३७ ॥

जोगीके बेशमें हम निकले ऐ अहले वतन तुम शाद रहो।
हम जान वतन पर देने को, निकले हैं तुम आबाद रहो॥
घर बार सभी अब छोड़ा है, की है उल्फत आज़ादी से।
हम रहें रहें न रहें तुम तो, ऐ अहले वतन आजाद रहो।
आज़ादी हम पर रोती है, मुंह अश्कोंसे हसरत धोती है।
जब बच्चे मांओंसे कहते हैं, हम हो कि नहों तुम शाद रहो॥
तहरीक खुदा आज़ादी की, यूं राह हमें दिखलाती है।
जब आया वक्त रिहाई का आज़ाद रहो आज़ाद रहो॥
इस कामका हरएक आमिल हो, तहरीक खुदा जब शामिल हो।
बैनीचन्द कहो उनसे तुम अब, चूड़ी पहनो और शाद रहो॥

स्वतन्त्रा हित वीर बलिदान ॥ ३८ ॥

भारत हित अन गिन वीरों के बलिवेदी पर बलिदान हुए।
निज स्वतन्त्रता प्यारी के लिये बहु शूर वीर कुर्बान हुए॥
बहादुरशाहके निजबच्चोंको ज़ालिम हुटसनने कत्ल किया।
खूं उन का चुल्लू से पीकर हिंसक वे पशू समान हुए॥
झांसी की लक्ष्मी बाई ने रण में शत्रु संग शस्त्र गहे।
किये झुण्ड मुण्ड धड़से न्यारे मृत्यु मुख सब नादान हुए॥
उस खुदीराम ने खुद करके दिखलाया फांसी पर चढ़के।
परवाह न की कुछ मृत्यु की वे आतम वीर बलवान हुए॥
श्री कन्हैदत्त और ढिंगरेने किये प्राण निछावर भारत पर।
ऐसे ही अन गिन वीरों के भारत में यों सनमान हुए।

आजादी हित अशफाकउल्ला लटके फांसी के तख्ते पर ॥
नहीं डरे मृत्यु घर आने से जुदा क्षणमें तन से प्राण हुए ॥
व्रत धारी वीर जितेन्द्र ने त्रेसट दिन भूख कष्ट सह कर ।
निज प्राण दिये सत्याग्रह कर भारत में उनके मान हुए ।
पंजाब केसरी लाजपत को मारा हा ! पुलिस ने डंडों से ।
ले वार सभी छाती बीर जा स्वर्ग धाम मेहमान हुए ।
गान्धी ने व्रत अहिंसा का भारत में फिर प्रचार किया ।
दिया युद्ध ठान अँग्रेज़ों से रक्षक उनके भगवान हुए ।
ऐ भारत वीर उठो जल्दी रणभेरी गान्धी बजा रहा ।
"प्रेमी" भारत आज़ाद करो जीवित क्यों मृतक समान हुए ॥

सितमगर की अय्यारी ॥ ३६ ॥

पहिले तो कुछ हाल भी था अब तो बदतर होगया ।
जार शाही से भी बढ़ कर वह सितमगर होगया ॥
हमने की मेहमानवाज़ी उसका फल हम को मिला ।
लुटगया सब मालो ज़र और घर से बे घर होगया ॥
दस्तकारी छीन कर व्यापार सब चौपट किया ।
नङ्गा तन ढकने को मुश्किल तार खद्दर होगया ॥
देश का हित चाहने वाले लटकते दार पर ।
कौम का दुश्मन हमारे खुद ब खुद "सर" होगया ॥
एक भी वादा भी न ज़ालिम ने कभी पूरा किया ।
झूठे वादों पर ही भारत घुल के पिञ्जर होगया ॥
गोलियां बरसाईं उसने बेगुनाहों पर अबस ।
भारतीय जनता का जिस से हाल मुसतर होगया ॥

खाने को रोटी न बेहतर पीने को पानी दिया।
भूख से घुल मौत के मुंह में जितेन्द्र होगया॥
खूंन नाहक का हमारे अब असर होने लगा।
रोटियों से तङ्ग उनका मानचष्टर होगया॥
लाजपत की मौत का "प्रमी" जिकर क्यों कर करे।
तर ज़माने दिल हमारा दीदये तर होगया॥

अच्छे दिन आने वाले हैं॥ ४० ॥

ऐ मादरे हिन्द न हो ग़मगीन अच्छे दिन आने वाले हैं।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनान वाले हैं॥
मा तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ जईफ़ी में।
मायूस न हो मग़रूरों को हम मज़ा चखाने वाले हैं॥
कमज़ोर हैं और मुफ़लिस हैं हम गो कुञ्ज कफ़स में बेबस हैं।
बेबस हैं लाख मगर माता हम आफ़त के परकाले हैं॥
हिन्दू और मुस्लिम मिल कर के चाहे जो हम कर सकते हैं।
ऐ चखकुहन हुशियार हो तू पुर शोर हमारे नाले हैं॥
मेरी रूहको करना क़ैद क़तल इमकानसे बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं।
मग़लूब जो हैं होंगे ग़ालिब महकूम जो हैं होंगे हाकिम।
सदा एकसा वक्त रहा किसका कुदरतके तौर निराले हैं॥
यहां आये मुसाफिर बड़े २ कुछ रोज़में यहाँ से चले गये।
यह चन्द दिनों में गोरे भी लन्दन को जाने वाले हैं॥
गान्धी ने तर्क ताऊन का यह कैसा मन्त्र चलाया है।
लरज़ा है जिस से अर्ज़ समां सरकार को जानके लाले हैं॥

किसान पुकार ॥ ४१ ॥

हमारे प्रभू तुम ही हो रखवार ॥
जो कुछ भी खलहान खेत में सब हर गवा हमार।
चौकीदार पटवारी दरोगा और लेगवा जमींदार ॥ १ ॥
बिटिया बिटुवा भूखी महरिया भूखा है सब परिवार।
तेउतो गुड़इत पनहिन मारे, कहत चलो बेगार ॥ २ ॥
चार दिना के भूखे पड़े हैं खाली पेट हमार।
अब सुध लेवो दीन प्रतिपालक मरत मेरा परिवार ॥ ३ ॥
साम्यवाद की क्यों न बजावें हम मुर्ली सुख साज।
नष्ट करें जालिम धनियों को तब होगा उद्धार ॥ ४ ॥

एक निर्वासित की स्वदेश याद ॥ ४२ ॥

परदेश में हैं हम दूर वतन ऐ चर्ख़ मुझे बरबाद न कर।
कुछ हद भी है रञ्जो मुसीबतकी तू हमपे सितम जल्लाद न कर॥
आये हैं वतनको छोड़के हम घरबारके छुटने का दिल पै है गम।
मारे हुए हैं तक़दीर के हम तू हम पै सितम बेदाद न कर॥
दुनियां के सभी ये धन्धे हैं सब मकरो फ़रेब के फन्दे हैं।
हम भी तो खुदा के बन्दे हैं बरबाद को तू बर्बाद न कर॥
हम हिन्द के रहने वाले हैं कुछ मुंह से न कहने वाले हैं।
दुख दर्द के सहने वाले हैं तू हम पै सितम ईजाद न कर॥
ऐ "शम्श" मुक़द्दर सोता है रोने से भला क्या होता है।
क्यों हिंद का नाम डबोता है परदेश में तू फ़रियाद न कर॥

मोहन और मोहनदास ॥ ४३ ॥

उठा लेखनी आज फिर लेकर यह अभिमान।
मोहन मोहन दास का करना है गुण गान ॥

इसी देश की मेटने आये दोनों त्रास।
वह केवल मोहन रहे यह हैं मोहनदास ॥

वह विख्यात वृज विहारी थे तो यह गुजरात बिहारी हैं।
वह चक्र सुदर्शन धारी थे, तो यह भी तकलीधारी हैं।
वह काली कमली वाले थे यह खादी मय दिखलाते हैं।
वह वंशी मधुर बजाते थे, यह चरखा खूब चलाते हैं।
वह प्रगटे कारागार में थे, यह कारागार के वासी हैं।
वह सूत्र महाभारत के थे, यह नेता सत्याग्रह के हैं।
वह दूध गाय का पीते थे, इनको बकरी का भाया है।
गोवरधन उधर उठाया था भारत को इधर जगाया है।
वह मथुरा से द्वारिका आये थे, यह अफ्रीका रह आये हैं।
वह माखन चोर कहाते हैं, यह नमक चोर कहलाये हैं।
उन का भी भक्त जमाना था, इनका भी भक्त जमाना है।
उन मोहन का बरसाना था, इन मोहन का धरसाना है।
तब भी यह भारत निर्भय था अब भी यह भारत निर्भय है।
इस कारण राधेश्याम कहो, सब मिल कर मोहनदास की जै।

॥ इति शुभम् ॥

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
14 DEC. 1931
DE..

My challenge to tho British nation is-- Will you settle it with pen or sword, with ink or blood ?

India has no arms, but if she has to fight with her back to the wall, she can make swords out of her bones, and she will have her freedom. *Sarojini Naidu*

I offer neither pay, nor quarter, nor provisions, I offer hunger, thirst, forced marches, battles, and death. Let him who loves his country in his heart, not with his lips, only follow me.

Garibildi

So many Jatins are pining away in the jails and so many Lajpats are beaten to death. When Mahendrapratap ars exiled a d Bhagats and Datts are transported what are we youugmen for ?

Shou'd we sit idle ?

BE AGGRESSIVE.

AND

Shake to Faith your chains lik edew
Which in sleep have fallen on you

Somen Mookerjee

मैनेजर-कांग्रेस पुस्तकालय देहरादून।

यह पुस्तक और अन्य हर प्रकार की राष्ट्रीय, सामाजिक

पुस्तकें मिलने का पता—

रणवीर वर्मा मैनेजर वीर-भारत पुस्तकालय,

देहरादून।